प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'मन की बात'

मुख्य अंश

मैं, सभी देशवासियों को 2020 के लिए हार्दिक शुभकामनायें देता हूं. इस दशक के बारे में एक बात तो निश्चित है, इसमें, देश के विकास को गति देने में वो लोग सक्रिय भूमिका निभायेंगे जिनका जन्म 21वीं सदी में हुआ है -जो इस सदी के महत्वपूर्ण मुद्दों को समझते हुये बड़े हो रहे हैं. ऐसे युवाओं के लिए, आज, बहुत सारे शब्दों से पहचाना जाता है. कोई उन्हें Millennials के रूप में जानता है, तो कुछ उन्हें, Generation Z या तो Gen Z ये भी कहते हैं. और व्यापक रूप से एक बात तो लोगों के दिमाग में फिट हो गई है कि ये Social Media Generation है. हम सब अनुभव करते हैं कि हमारी ये पीढ़ी बहुत ही प्रतिभाशाली है. कुछ नया करने का, अलग करने का, उसका ख्वाब रहता है. उसके अपने opinion भी होते हैं और सबसे बड़ी खुशी की बात ये है, और विशेष करके, मैं, भारत के बारे में कहना चाहूंगा, कि, इन दिनों युवाओं को हम देखते हैं, तो वो, व्यवस्था को पसंद करते हैं, system को पसंद करते हैं। इतना ही नहीं, वे system को, follow भी करना पसंद करते हैं. और कभी, कहीं system, properly respond ना करें तो वे बैचेन भी हो जाते हैं और हिम्मत के साथ, system को, सवाल भी करते हैं. मैं इसे अच्छा मानता हूं. एक बात तो पक्की है कि हमारे देश के युवाओं को, हम ये भी कह सकते हैं, अराजकता के प्रति नफ़रत है. अव्यवस्था, अस्थिरता, इसके प्रति, उनको, बड़ी चिढ़ है. वे परिवारवाद, जातिवाद, अपना-पराया, स्त्री-पुरुष, इन भेद-भावों को पसंद नहीं करते हैं. कभी-कभी हम देखते हैं कि हवाई अड्डे पर, या तो सिनेमा के theatre में भी, अगर, कोई कतार में खड़ा है और बीच में कोई घुस जाता है तो सबसे पहले आवाज उठाने वाले, युवा ही होते हैं. और हमने तो देखा है, कि, ऐसी कोई घटना होती है, तो, दूसरे नौजवान तुरंत अपना mobile phone निकाल करके उसकी video बना देते हैं और देखते-ही-देखते वो video, viral भी हो जाता है. और जो गलती करता है वो महसूस करता है कि क्या हो गया! तो, एक नए प्रकार की व्यवस्था, नए प्रकार का युग, नए प्रकार की सोच, इसको, हमारी युवा-पीढ़ी परिलक्षित करती है. आज, भारत को इस पीढ़ी से बहुत उम्मीदे हैं. इन्हीं युवाओं को, देश को, नई ऊंचाई पर ले जाना है. स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था -"My Faith is in the Younger Generation, the Modern Generation, out of them, will come my workers". उन्होंने कहा था -'मेरा विश्वास युवा पीढ़ी में है, इस आधुनिक generation में है, modern generation में है, और, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया था, इन्हीं में से, मेरे कार्यकर्ता निकलेंगे. युवाओं के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा - ''युवावस्था की कीमत को ना तो आंका जा सकता है और ना ही इसका वर्णन किया जा सकता है''. यह जीवन का सबसे मूल्यवान कालखंड होता है. आपका भविष्य और आपका जीवन, इस पर निर्भर करता है कि आप अपनी युवावस्था का उपयोग किस प्रकार करते हैं. विवेकानंद जी के अनुसार, युवा वह है जो energy और dynamism से भरा है और बदलाव की ताकत रखता है. मुझे पूरा विश्वास है कि भारत में, यह दशक, ये decade, न केवल युवाओं के विकास का होगा, बल्कि, युवाओं के सामर्थ्य से, देश का विकास करने वाला भी साबित होगा और भारत को आधुनिक बनाने में इस पीढ़ी की बहुत बड़ी भूमिका होने वाली है, ये मैं साफ अनुभव करता हूं. आने वाली 12 जनवरी को विवेकानंद जयंती पर, जब देश, युवा-दिवस मना रहा होगा, तब प्रत्येक युवा, इस दशक में, अपने इस दायित्व पर जरुर चिंतन भी करे और इस दशक के लिए अवश्य कोई संकल्प भी ले.

- अभी पिछले दिनों, मीडिया में 'संकल्प Ninety Five' की कहानी मैंने सुनी. ये कार्यक्रम सरकार का नहीं था, न ही सरकार का initiative था. ये वहां के K.R High School, उसके जो पूर्व-छात्र थे, उनकी जो Alumni Meet थी, उसके तहत उठाया गया कदम था, और, 'संकल्प Ninety Five' का अर्थ है- उस High School के 1995 (Nineteen Ninety Five) Batch के विद्यार्थियों का संकल्प. दरअसल, इस Batch के विद्यार्थियों ने एक Alumni Meet रखी और कुछ अलग करने के लिए सोचा. इसमें बेतिया के सरकारी Medical College और कई अस्पताल भी जुड़ गये. उसके बाद तो, जैसे, जन-स्वास्थ्य को लेकर एक पूरा अभियान ही चल पड़ा. निशुल्क जांच हो, मुफ्त में दवायें देना हो, या फिर, जागरूकता फ़ैलाने का, 'संकल्प Ninety Five' हर किसी के लिए एक मिसाल बनकर सामने आया है.

29 दिसंबर, 2019

हम अक्सर ये बात कहते हैं कि जब देश का हर नागरिक एक कदम आगे बढ़ता है, तो ये देश, 130 करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है. ऐसी बातें जब समाज में प्रत्यक्ष रूप में देखने को मिलती हैं तो हर किसी को आनंद आता है, संतोष मिलता है और जीवन में कुछ करने की प्रेरणा भी मिलती है.

- उत्तर प्रदेश के फूलपुर की कुछ महिलाओं ने अपनी जीवटता से, पूरे इलाके को प्रेरणा दी है. इन महिलाओं ने साबित किया है कि अगर एकजुटता के साथ कोई संकल्प ले तो फिर परिस्थितियों को बदलने से कोई रोक नहीं सकता. कुछ समय पहले तक, फूलपुर की ये महिलाएं आर्थिक तंगी और गरीबी से परेशान थीं, लेकिन, इनमें अपने परिवार और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का जज़्बा था. इन महिलाओं ने, कादीपुर के स्वंय सहायता समूह, Women Self Help Group उसके साथ जुड़कर चप्पल बनाने का हुनर सीखा, इससे इन्होंने, न सिर्फ अपने पैरों में चुभे मजबूरी के कांटे को निकाल फेंका, बल्कि, आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार का सम्बल भी बन गईं. ग्रामीण आजीविका मिशन की मदद से अब तो यहाँ चप्पल बनाने का plant भी स्थापित हो गया है, जहां, आधुनिक मशीनों से चप्पलें बनाई जा रही हैं.
- मैंने लाल किले से 15 अगस्त को देशवासियों को एक बात के लिए आग्रह किया था और मैंने कहा था कि हम देशवासी local खरीदने का आग्रह रखें. आज फिर से एक बार मेरा सुझाव है, क्या हम स्थानीय स्तर पर बने उत्पादों को प्रोत्साहन दे सकते हैं? क्या अपनी खरीदारी में उन्हें प्राथमिकता दे सकतें हैं? क्या हम Local Products को अपनी प्रतिष्ठा और शान से जोड़ सकते हैं? क्या हम इस भावना के साथ अपने साथी देशवासियों के लिए समृद्धि लाने का माध्यम बन सकते हैं? मेरे प्यारे देशवासियो, क्या हम संकल्प कर सकते हैं, कि 2022, आज़ादी के 75 वर्ष हो रहे हैं, कम-से-कम, ये दो-तीन साल, हम स्थानीय उत्पाद खरीदने के आग्रही बनें? भारत में बना, हमारे देशवासियों के हाथों से बना, हमारे देशवासियों के पसीने की जिसमें महक हो, ऐसी चीजों को, हम, खरीद करने का आग्रह कर सकते हैं क्या? मैं लम्बे समय के लिए नहीं कहता हूं, सिर्फ 2022 तक, आज़ादी के 75 साल हो तब तक. और ये काम, सरकारी नहीं होना चाहिए, स्थान-स्थान पर नौजवान आगे आएं, छोटे-छोटे संगठन बनायें, लोगों को प्रेरित करें, समझाएं और तय करें - आओ, हम लोकल खरीदेंगे, स्थानीय उत्पादों पर बल देंगे, देशवासियों के पसीने की जिसमें महक हो - वही, मेरे आज़ाद भारत का सुहाना पल हो, इन सपनों को लेकर के हम चलें.
- मेरे प्यारे देशवासियों, यह, हम सब के लिए, बहुत ही महत्वपूर्ण है, कि देश के नागरिक, आत्मनिर्भर बनें और सम्मान के साथ अपना जीवन यापन करें. मैं एक ऐसे पहल की चर्चा करना चाहूंगा जिसने मेरा ध्यान खींचा और वो पहल है, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख का हिमायत प्रोग्राम. हिमायत दरअसल Skill Development और रोज़गार से जुड़ा है. इसमें, 15 से 35 वर्ष तक के किशोर और युवा शामिल होते हैं. ये, जम्मू-कश्मीर के वे लोग हैं, जिनकी पढ़ाई, किसी कारण, पूरी नहीं हो पाई, जिन्हें, बीच में ही स्कूल-कॉलेज छोड़ना पड़ा. इस कार्यक्रम के अंतर्गत, पिछले दो सालों में, अठारह हज़ार युवाओं को, 77 (seventy seven), अलग-अलग ट्रेड में प्रशिक्षण दिया गया है. इनमें से, क़रीब पांच हज़ार लोग तो, कहीं-न-कहीं job कर रहे हैं, और बहुत सारे, स्व-रोज़गार की ओर आगे बढे हैं. हिमायत प्रोग्राम से अपना जीवन बदलने वाले इन लोगों की जो कहानियां सुनने को मिली हैं, वे सचमुच ह्रदय को छू लेती हैं.
- मेरे प्यारे देशवासियों, 26 तारीख को हमने इस दशक का आख़िरी सूर्य-ग्रहण देखा. शायद सूर्य-ग्रहण की इस घटना के कारण ही MY GOV पर रिपुन ने बहुत ही Interesting comment लिखा है. वे लिखते हैं... नमस्कार सर, मेरा नाम रिपुन है.. मैं north-east का रहने वाला हूं लेकिन इन दिनों south में काम करता हूं. एक बात मैं आप से share करना चाहता हूं. मुझे याद है हमारे क्षेत्र में आसमान साफ़ होने की वजह से हम घंटों, आसमान में तारों पर टकटकी लगाये रखते थे. star gazing, मुझे बहुत अच्छा लगता था. अब मैं एक professional हूं. और अपनी दिनचर्या के कारण, मैं इन चीज़ों के लिए समय नहीं दे पा रहा हूं.' क्या आप इस विषय पर कुछ बात कर सकते हैं क्या? विशेष रूप से Astronomy को युवाओं के बीच में कैसे popular किया जा सकता है? 'मेरे प्यारे देशवासियो, मुझे सुझाव बहुत आते हैं लेकिन मैं कह सकता हूं कि इस प्रकार का सुझाव शायद पहली बार मेरे पास आया है. वैसे विज्ञान पर, कई पहलुओं पर बातचीत करने का मौका मिला है. खासकर के युवा पीढ़ी के आग्रह पर मुझे बातचीत करने का अवसर मिला है. साथियो, भारत में Astronomy यानि खगोल-विज्ञान का बहुत ही प्राचीन और गौरवशाली इतिहास रहा है. आकाश में टिमटिमाते तारों के साथ हमारा संबंध, उतना ही पुराना है जितनी पुरानी हमारी सभ्यता है. आप में से बहुत लोगों को पता होगा कि भारत के अलग-अलग स्थानों में बहुत ही भव्य जंतर-मंतर हैं, देखने योग्य हैं. और, इस जंतर-मंतर का Astronomy से गहरा संबंध है. मेरे प्यारे देशवासियो, Astronomy के क्षेत्र में भारत काफी आगे है और हमारे initiatives, path breaking भी हैं. हमारे पास, पुणे के निकट विशालकाय Meter Wave Telescope है. इतना ही नहीं, Kodaikanal , Udaghmandalam ,Guru shikhar और Hanle Ladakh में भी powerful telescope हैं. 2016 में, बेल्जियम के तत्कालीन प्रधानमंत्री, और मैंने, नैनीताल में 3.6 मीटर देवस्थल optical telescope का उद्घाटन किया था. इसे एशिया का सबसे बड़ा telescope कहा जाता है. ISRO के पास ASTROSAT नाम का एक Astronomical satellite है. सूर्य के बारे में research करने के लिये ISRO, 'आदित्य' के नाम से एक दूसरा satellite भी launch करने वाला है. खगोल-विज्ञान को लेकर, चाहे, हमारा प्राचीन ज्ञान हो, या आधुनिक उपलब्धियां, हमें इन्हें अवश्य समझना चाहिए, और उनपर गर्व करना चाहिए. आज हमारे युवा वैज्ञानिकों में' न केवल अपने वैज्ञानिक इतिहास को जानने की ललक दिखाई पड़ती है बल्कि वे, Astronomy के भविष्य को लेकर भी एक दृढ़ इच्छाशक्ति रखते हैं.
- मेरे प्यारे देशवासियो, हमारी संसद को, लोकतंत्र के मंदिर के रूप में हम जानते हैं. एक बात का मैं आज बड़े गर्व से उल्लेख करना चाहता हूं कि आपने जिन प्रतिनिधियों को चुन करके संसद में भेजा है उन्होंने पिछले 60 साल के सारे विक्रम तोड़ दिये हैं. पिछले छः मास में, 17वीं लोकसभा के दोनों सदनों, बहुत ही productive रहे हैं. लोकसभा ने तो 114 प्रतिशत काम किया, तो, राज्य सभा ने Ninty four प्रतिशत काम किया. और इससे पहले, बजट-सत्र में, करीब 135 फ़ीसदी काम किया था. देर-देर रात तक संसद चली. ये बात मैं इसलिये कह रहा हूं कि सभी सांसद इसके लिये बधाई के पात्र हैं, अभिनन्दन के अधिकारी हैं.
- मेरे प्यारे देशवासियो, सूर्य, पृथ्वी, चंद्रमा की गति केवल ग्रहण तय नहीं करती है, बल्कि, कई सारी चीजें भी इससे जुड़ी हुई हैं. हम सब जानते हैं कि सूर्य की गति के आधार पर, जनवरी के मध्य में, पूरे भारत में विभिन्न प्रकार के त्योहार मनाये जाएंगे. पंजाब से लेकर तमिलनाडु तक और गुजरात से लेकर असम तक, लोग, अनेक त्योहारों का जश्न मनायेंगे. जनवरी में बड़े ही धूम-धाम से मकर- संक्रांति और उत्तरायण मनाया जाता है. इनको ऊर्जा का प्रतीक भी माना जाता है. इसी दौरान पंजाब में लोहड़ी, तमिलनाडु में पोंगल, असम में माघ-बिहु भी मनाये जाएंगे. ये त्योहार, किसानों की समृद्धि और फसलों से बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं. ये त्यौहार, हमें, भारत की एकता और भारत की विविधता के बारे में याद दिलाते हैं.

मेरे प्यारे देशवासियो, 2019 की ये आख़िरी 'मन की बात' है. 2020 में हम फिर मिलेंगे. नया वर्ष, नया दशक, नये संकल्प, नयी ऊर्जा, नया उमंग, नया उत्साह - आइये चल पड़ें. संकल्प की पूर्ति के लिए सामर्थ्य जुटाते चलें. दूर तक चलना है, बहुत कुछ करना है,देश को नई ऊंचाइयों पर पहुंचना है. 130 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थ पर, उनके सामर्थ्य पर, उनके संकल्प पर, अपार श्रद्धा रखते हुए, आओ, हम चल पड़ें.

-पसूका